Indian Streams Research Journal ISSN 2230-7850
Volume-3, Issue-7, August-2013

राजेश रेड्डी की गजलोंमें धार्मिक चेतना

निलेश स. डामसे
मलती वसंतदादा पाटील कन्या महाविद्यालय, इस्मालपूर, ता. वाळवा. जि. सांगली

सारांश: हिंदुस्थान धर्मनिरपेक्ष राश्ट्र है । धर्म एक संस्कार होता है । धर्म लोगों की भावनाओं से जुडा हुआ होता है । व्यक्ति शिक्षित हो या अनपढ धर्म के इस संबंध को ध्यान में लेकर ही आज के धुर्त, स्वार्थी, राजकिय नेता तथा धर्म के पंडित आपने स्वार्थ के लिए इसका इस्तमाल करते है । विशिश्ट धार्मिक समुदाय से चुनाव में वोट हासित करने के लिए ये राजकिय नेता एक समुदाय को दुसरे समुदाय से लडवा देते हैं । इस लडाई का विशाल रुप ही ये आज के होने वाले धार्मिक दंगे हैं । हर धर्म एकता की सिख देता है किन्तू लोग धर्म कि सिख भूलकर धर्म स्थलों के नामपर झगडते रहते हैं ।

प्रस्तावना :

गजल काव्य की एक ऐसी विधा है, जो बहुत पुरानी होते हुए भी, इराने शुरु से आज तक अपनी लोकप्रियता बनाये रखी है । गजल में कोमलता एवं श्रृगांरिकता होती हैं जो सबका मन मोह लेती है । यह ऐसी विधा है जो कम शब्दों मे बहुत बडी बात कहती हैं । अरबी में 'गजल' का शाब्दिक अर्थ है 'माशूक से बातचीत' । किन्तु आज गजल का हर शेर जिन्दगी की सच्चाई पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है, चाहे वह पीडापूर्ण हो या प्रेमपूर्ण ।

साठोत्तरी गजल की सबसे बडी विशेषता इसकी भाषा में आयी सरलता है । गजलकारोंने कठिप उर्दू शब्दों के स्थान पर सरल उर्दू शब्दों तथा बोलचाल के शब्दों को अपनाकर एक नयी भाषा शैली को जन्म दिया है य जिससे गजल सर्वसाधारण लोगों तक पहूँच गयी है । फारसी– उर्दू की गजलों में इश्क– मुहब्बत, शराब–शबाबत, मिलन–जुदाई, जवानी का जिक मिलता है । जब की हिंदी गजले ऐसे विषयों से कोसो दूर रही हैं । हिंदी गजल इश्क–मुहब्बत और शराब–शबाब का दरबारी वातावरण छोडकर आम लोगों तक आ गयी है । फारसी–उर्दू गजल राजमहलों में रहनेवाली कीमती आभूषणों तथा कीमती वस्त्रों से सज्जित नारी के समान है । यह केवल इश्क मुहब्बत की बातें ही करती आयी है । बल्कि हिंदी गजल सर पर पल्लू लेने वाली, साडी में लिपटी, कानों में बाली, हाथ में कॉच की चूडियॉ और पैरों में पायल पहनने वाली आम भारतीय नारी के समान है । यह अपने घर– परिवार तथा समाज में जो कुछ देखती है उसी की बात करती है ।

दुश्यंत कुमार की परंपरा को आगे बढाने वाले ऐसे ही एक गजल कार कहते है 'राजेश रेड्डी' । इनके तीन गजल संग्रह 'उडान', आसमान से आगे और 'वजूद' एक साथ फारसी लीपी और देवनागरी में प्रकाशित हुए है । इनकी भाषा आज के आम आदमी की बोली ' हिंदूस्थानी ' है । इनके गजलों के कथ्य में समाज और जिंदगी दोनों का चित्रण मिलता हैं । इनका वास्तविक चित्र वे हमारे सामने प्रस्तुत करते है ।

राजेंश की गजलो में धार्मिक चेतना :–

धर्म समाज की भावनाओं से संबंधित होता है । किंतु आज कुछ नेताओं के द्वारा इसे राजकीय मुद्दे के रुप में इस्तमाल किया जा रहा है । आज भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में धर्म का यही स्वरुप हैं । साधु, संत, महंत, मुल्ला, मौलवी आदि आडंबर रचाकर समाज में अपनी धाक जमाये हुए हैं । धर्म इन्हीके हातों में है । राजेश कहते हैं–

'' पहले टुकडो में बॅटी सारी जमीं, फिर असमों
अब खुदा भी बॅट गया मजहब के हकदारों के बीच ।''[1]

हर धर्म की ईश्वर के स्वरुप संबंधी अपनी अलग मान्यताऐं भी हैं । राजेश कहते हैं –

'' आग है, पानी है, मिट्टी है, हवा है मुझमें
मुझको ये वहम नही है कि खुदा है मुझमें ।''[2]

एक मान्यता ये भी है कि ईश्वर न मूर्तीयों में होता है और न ही मंदीर – मस्जिद में वह तो मनुष्य में होता है किन्तु इस दौर के इन्सान को देखकर राजेश कहते हैं जो अपने स्वार्थ हेतु अपने संगो का खून बहा दे वह इन्सान शैतान से कम नहीं । वे कहते हैं –

'' दिन–ब–दिन बढता गया षैतान हर इन्सान में
दिन–ब–दिन हर आदमी में देवता कम हो गया ।''[3]

भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष विभीन्न धर्म के लोगों के देश में धार्मिक एकता की बात करते हुए राजेश कहते हैं कि इन्सान और इन्सानियत ही सबसे बठा धर्म है । –

'' गीता हूँ कुरआन हूँ में
मुझको पढ इन्सान हूँ में ।''[4]

'' मैं इन्सों था, इन्सॉ हूँ, इन्सॉ रहूँगा
जो करना को हिन्दू–मुसलमान कर जें ।''[5]

आज लोग कहॉ अपना खुदा ढूँढ रहे है । यह कहते हुए राजेश कहते है –

'' पूजा में, नमाजो में, अजानों में भजन में
ये लोग कहॉ अपना खुदा ढूँढ रहे हैं । ''[6]

आज किसी भी मंदिर–मस्जिद में ईश्वर नहीं मिलता वहॉ तो केवल धर्म ही मिलता है । वे कहते हैं –

'' कहॉ दैरो– हरम में रब मिलेगा
वहॉ तो बस कोई मजहब मिलेगा ।''[7]

धर्म आज के ठेकेदारों के हाथों में फॅस गया हैं । ये अपने स्वार्थ के लिए धर्म का जैसे चाहिए इस्तमाल करते हैं। ये धर्म के ठेकेदार जब धर्म की आबरु बचाने निकलते हैं तो क्या होता है ?ये बताते हुए राजेश कहते हैं । –

'' निकले है फिर बचाने वो मजहब की आबरु
फिर नए फसाद के आसार हो गए ।''[8]

आए दिन धार्मिक दंगे होते रहते है य किन्तु कोई भी धर्म या धर्म का तत्वज्ञान आपसी बैर नही सिखाते यही बात राजेश कहते है –

'' मस्जिदों पर जान की कुर्बा शिवालों पर हुए
कितने काले तजरुबे उजली किताबोंपर हुए ।''[9]

ईश्वर कि भक्ती करणे के लिए किसी कर्मकांड की आवश्यकता नही हैं । सच्चे दिल से भक्ति कि जाए तो मस्जिद या मंदिर में जाने की जरुरत नही है । राजेश कहते है –

'' दिल ही बहुत है मेरा इबादत के वास्ते
मस्जिद का क्या करुँ मैं षिवालों का क्या करुँ ''[10]

ISSN 2230-7850
Volume-3, Issue-7, August-2013

आज विडंबना यह है की दिखवा न करनेवालों को धर्म के ठेकेदार काफिर मानते है ।

''इबादतों को जो जाहिर नहीं किया करते
खुदा के बन्दे उन्हे काफरों में रखते हैं ।''[11]

राजेश अपनी गजलों में धार्मिक एकता बनी रहे ये इच्छा भी व्यक्त करते हैं वे कहते है–

'' ऐ खुदा ! जिसमें जी सके इन्सॉ
कोई ऐसा जहान पैदा कर ।
दिल से निकले दिलो में बस जाए
ऐसी आसॉ जुबान पैदा कर ।''[12]

आज कि विडंबना यह है कि जरुरतमंद गरिबों को एक वक्त का खाना तक दान नही किया जाता किन्तु संसार में सन्यास लिए हुए हर मजहब के संतो सन्यासियों के चरणों में लाखो– करोडों के चढावे चढायें जाते है । ये शेर देखिए –

'' जिनको जहॉ की चीजों से कोई गरज न थी
छुनिया ने उनके कदमों मे सारा जहॉ रखा ''[13]

इस प्रकार राजेशजी की गजलों में आज की धार्मि चेतना का वास्तविक चित्रण हुआ है। धर्म समाज को जोडणे के बजाय तोड रहा है । धर्म ही समाज में दिवार खडी कर रहा है । धर्म के नामपर कितने ही दंगे हो रहे हैं । यही राजेश अपनी गजलों से कहते है ।

राजेश कहते है :–

'' मस्जिदों पर जान दी कुर्बा षिवालों पर हुए
कितने काले तजरुबे उजली किताबों पर हुए ।''

राजेशजी ने अपनी गजलों में इसी धार्मिक आडंबरोंपर प्रहार किया है । राजकिय नेताओं तथा धर्म के संत, महंत, मुल्ला, मौलवी की साजीशों को चित्रित किया है । धर्म राजकिय तथा धर्म के ठेकेदारों के ही हाथों में फंस गया है, इसका वास्तविक चित्र प्रस्तुत किया है राजेश रेड्डीजी ने ।

संदर्भ :–

पुस्तक	कमांक	लेखक	पृष्ठ
उडान	1	राजेश रेड्डी	30
उडान	2	राजेश रेड्डी	54
उडान	3	राजेश रेड्डी	66
उडान	4	राजेश रेड्डी	23
उडान	5	राजेश रेड्डी	38
उडान	6	राजेश रेड्डी	84
उडान	7	राजेश रेड्डी	61
उडान	8	राजेश रेड्डी	68
आसमान से आगे	9	राजेश रेड्डी	20
उडान	10	राजेश रेड्डी	67
उडान	11	राजेश रेड्डी	89
उडान	12	राजेश रेड्डी	86
उडान	13	राजेश रेड्डी	94